सम्राट अकबर ने भी अपने राज्यकाल में कला के विकास में अपने राजकीय कला केंद्र के कलाकारों को प्रोत्साहित कर महाभारत के साथ-साथ रामायण के प्रसंगों का भी चित्रण करवाया। अकबरकालीन वह शाही प्रति जिसमें 176 चित्र बने थे, आज भी जयपुर के सवाई मानसिंह राजकीय कला केंद्र के संग्रहालय में सुरक्षित है। यह भी कहा जाता है कि जो 130 चित्र फ्रियर कलावीथि, वाशिंग्टन में संग्रहीत हैं, उन्हें 1598-99 में अब्दुर्रहीम खानखाना ने अपने लिए बनवाया था। इन दोनों संग्रहों को यदि संकलित कर दिया जाये, तो उनमें रामायण के प्राय: सभी प्रसंग आ जाते हैं।

प्रतिभा सम्पन्न कलाकार

अकबर ने महाभारत तथा रामायण के प्रसंगों को चित्रित करवा कर समीमवर्ती राज्यों के कलाकरों को प्रेरित किया। बुंदेलखंड के चित्रकारों के अर्ध-शाही (सब-इंपीरियल) पद्धति में 1600-1610 में रामायण संबंधी अनेक विषयों का चित्रण किया, जिनमें से कुछ नयी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय की अमूल्य निधि हैं। चेस्टरबेटी (अमरीका) संग्रह में 1602 ईस्वी की योग-वशिष्ठ पांडुलिपि में भी रामायण का चित्रण हुआ है, जिसे ऋषि वशिष्ठ ने लिखा था।

मुगल कलाकारों के अतिरिक्त मध्य भारत में मालवा के चितेरों ने भी 1635-1640 ईस्वी के मध्य में रामायण का चित्रण किया, जिनमें लाल, नीले, पीले और हरे रंगों के बाहुल्य के साथ-साथ चित्रकारों ने चित्रों को कई भागों में बांट कर इस प्रकार प्रस्तुत करने का प्रयास किया है, जिससे दर्शक राम की भावनाओं को हृदयंगम कर सकें। इसी तरह मेवाड़ शैली में भी रामायण का अत्यंत प्रभावशाली विधि से अंकन किया गया है। चित्रकार मनोहर ने बालकांड का महत्वपूर्ण सृजन कर अपने कौशल का परिचय दिया है। साहिबदीन राजा जगत सिंह (1628-92) के दरबार का प्रमुख चित्रकार था। उसने 1651-1652 में अरण्यकांड और युद्धकांड को चित्रित किया जो आजकल ब्रिटिश संग्रहालय, लंदन में संग्रहीत है। इसके कुछ पृष्ठ राजस्थान ओरिएंटल शोध संस्थान, उदयपुर में भी सुरक्षित हैं। 1653 में साहिबदीन एवं उसके शिष्य मनोहर ने संयुक्त रूप से किष्किंधा कांड का चित्रण किया। राजस्थान की अन्य रियासतों जैसे कोटा, बूंदी, बीकानेर आदि में भी रामायण के विभिन्न प्रसंगों ने कलाकारों को आकर्षित किया। रामलीला की प्रमुख झांकी (राम-दरबार) को कई कलाकारों ने चित्रित किया है। 1680 ईस्वी के आस-पास मालवा की एक चित्रित रामायण के 50 पृष्ठ नयी दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय में हैं। जयपुर के कलाकारों का विशिष्ट रूप से रामायण के कला सृजन में योगदान रहा

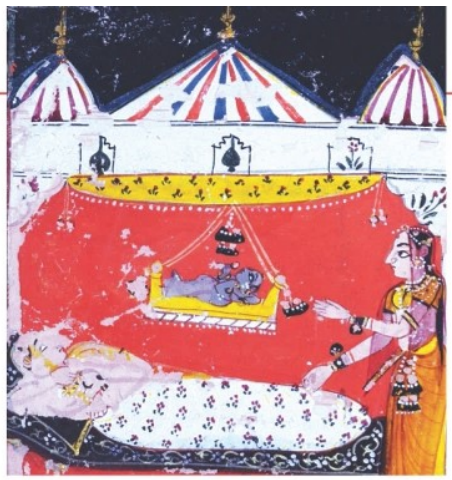

है। जयपुर केंद्र के कलाकार गुमान द्वारा 18 वीं शताब्दी में आनंद की आध्यात्म रामायण का चित्रण भी स्मरणीय है। 18 वीं शताब्दी में बुंदेली चित्रकारों ने रामायण की अंतरकथाओं में अहिरावण प्रसंग का अनुपम चित्रांकन किया। ये कृतियां राष्ट्रीय संग्रहालय में सुरक्षित हैं। मध्यप्रदेश की रीवां रियासत में तुलसीकृत रामचरितमानस पर आधारित रेखाचित्र अब भी संग्रहीत हैं।

पहाड़ी शैली

राजस्थान के अतिरिक्त 17 वीं शताब्दी में दक्कनी एवं मेवाड़ी मिश्रित शैली में भी रामायण के विषयों का अंकन हुआ, जो औरंगाबाद-मेवाड़ शैली के नाम से प्रसिद्ध है। इस कला के सृजन में पहाड़ी क्षेत्र के कलाकार भी पीछे नहीं रहे। चंबा राज्य में 1710-1720, 1765 और 1800-1810 ईस्वी में चित्रित विभिन्न चित्र अपने समय की कला शैली और प्रगति की कहानी कहते प्रतीत होते हैं। 1740 के लगभग चंबा के महलों में भित्ति चित्रों का अंकन हुआ। चंबा के भूरी सिंह संग्रहालय में रामायण विषय के लगभग 87 चित्र संग्रहीत हैं। इसी के समीपवर्ती क्षेत्र बसोहली में भी 1695 ईस्वी के लगभग रामायण पर आधारित प्रसंगों का चित्रण किया गया। इसी क्षेत्र के विलासपुर राज्य में 1710-1715 में तथा 1760-1770 ईस्वी में रामायण चित्रित की गयी। कुल्लू राज्य के कलाकारों ने भी 1610-1700 ईस्वी के आस-पास रामायण को जीवंत किया था। शांगरी रामायण के विषय में विद्वानों में इसके कुल्लू अथवा मंडी (स्थान के नाम) का होने का मतभेद है, परंतु इसका कलात्मक चित्रण विश्व प्रसिद्ध है। इसके लगभगा 100 चित्र राष्ट्रीय संग्रहालय की अमूल्य निधि हैं। 18 वीं शताब्दी की सचित्र बृजभाषा रामायण भी खुदाबख्श लाइब्रेरी, पटना में संग्रहीत है।

कांगड़ा पहाड़ी चित्रकला के लिए प्रसिद्ध रहा है। वहां के राजा संसारचंद के प्रश्रय में कलाकार रांझा ने 1816 में रामायण का रेखांकन किया। वह किसी कारणवश इन्हें रंग नहीं पाया, परंतु कला की दृष्टि से ये रेखाचित्र पूर्ण और अमूल्य हैं। इन कला केंद्रों के अतिरिक्त उड़ीसा के कलाकरों ने ताड़पत्र पर रामायण को रोचक रूप दिया। यह परंपरा आज भी वहां विद्यमान है। छपरा (बिहार) में भी रामायण के प्रकरणों को 1804 ईस्वी में एक अंग्रेज न्यायधीश के संरक्षण में चित्रित किया गया था। गुवाहाटी के कामरूप अनुसंधान केंद्र में लव-कुश तथा युद्धकांड (असमिया रामायण) के कुछ चित्र संग्रहीत हैं, जिनका अंकन 18 वीं शताब्दी में किया गया था। आशुतोष संग्रहालय, कलकत्ता में रामचरितमानस पर आधारित कुछ चित्र संकलित हैं।

ब्रिटिश लायब्रेरी, लंदन में तंजौर चित्रकला शैली में रामायण संगृहीत है, जो राजा शाहजी (1684-1711 ईस्वी) के काल में चित्रित की गयी थी। वाल्मीकि रामायण का माधव स्वामी ने अनुवाद किया था। तंजौर के सरस्वती पुस्तकालय में भी बालकांड के कुछ प्रमुख प्रसंगों का चित्रण संगृहीत है। हैदराबाद (आंध्रप्रदेश) के राजकीय संग्रहालय में आंध्र रामायण के चित्र उपलब्ध हैं। इन चित्रों पर आधारित एक पुस्तक भी प्रकाशित हो चुकी है।